Padma Bhushan

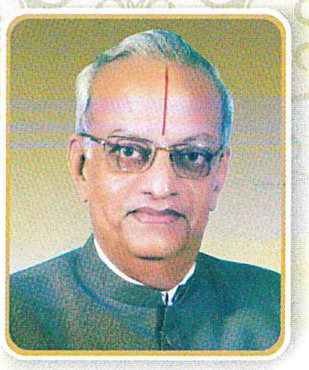

Shri Needamangalam Gopalaswami

Shri. Needamangalam Gopalaswami is a distinguished former Chief Election Commissioner of India, noted for his professionalism and adherence to principles.

2. Born on April 21, 1944, Shri Gopalaswami hails from Needamangalam Village in the erstwhile Thanjavur District of TamilNadu. He graduated in Chemistry from St. Joseph's College, Tiruchirappalli, Madras University and did post-graduation from Delhi University standing 1st, securing the Prof. R.P. Mitra gold medal in its year of inception. He joined the Indian Administrative Service in 1966 and for the first 25 years served in Gujarat in various positions. He was Collector Kutch District during the 1971 Indo-Pak war when his efforts in organizing Civil Defence in Bhuj and securing a large contingent of workers from Madhapar Village to repair the damaged air strip, in the midst of continuing bombardment, came in for praise. He served with distinction as Municipal Commissioner, Surat, Director of Relief, Joint Secretary (Home) and Secretary in the Departments of Education and Revenue.

3. Shri Gopalaswami served for more than 8 years in the Electronics field, first as Managing Director, Gujarat Communication and Electronics Ltd, Vadodra (1987-1992), a professional electronics equipment manufacturing company, securing its profitability. Later he served as Joint Secretary Software sector (1992-1996) in the Department of Electronics, GOI, helping policy formulation and creation of high speed data communication infrastructure through STPI and SATCOMM India.

4. Shri Gopalaswami's initiatives as Secretary, Department of Culture led to the prehistoric paintings at Bhimbetka in Madhya Pradesh, the medieval Fort Complex at Champaner in Gujarat, Gangaikonda Cholapuram and Darasuaram temples in Tamilnadu getting recognition as World Heritage Sites and Vedic chanting recognized and incorporated as Oral Heritage of the World. He was instrumental in the Department launching the National Manuscripts Mission (NMM) to unearth and preserve the manuscript wealth of our country.

5. Shri Gopalaswami served with distinction as Adviser (Education, Culture, Youth Affairs and Sports) in Planning Commission; as Secretary General, National Human Rights Commission; and later as Union Home Secretary where he brought special attention to the modernisation of police force and better housing facilities for police personnel.

6. Appointed as Election Commissioner in February 2004 and as Chief Election Commissioner in June 2006, Shri Gopalaswami was instrumental in mandating Photo Electoral Rolls for the 2009 General Elections to Parliament and in introducing analytical tools for indentifying age-group-wise and gender-wise gaps in the Electoral roll. During his stewardship the Commission moved from macro-management to booth level micro-management successfully curbing bogus voting and pre-poll and poll-day violence. Concurrently he served as a member of the Delimitation Commission also helping it achieve a gerrymandering free redrawing of Assembly and Parliamentary constituencies.

7. After retirement Shri Gopalaswami has continued to campaign for Electoral Reforms and free and fair elections, apart being an activist in Consumer related issues, Governance matters and in the propagation of Sanskrit.

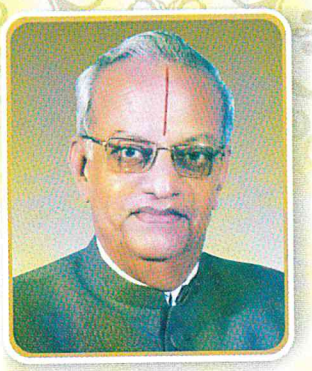

श्री नीडामंगलं गोपालास्वामी

श्री नीडामंगलं गोपालास्वामी, भारत के एक अत्यन्त विख्यात और प्रतिष्ठित पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त हैं। आप अपने व्यवसायिक कौशल और सिद्धांतों के पालन के प्रति अपनी दृढ़ता के लिए भली-भांति जाने-माने जाते हैं।

2. आपका जन्म अप्रैल 21, 1944 को हुआ। आप मूल रूप से तमिलनाडु के, पहले के तंजावुर जिले के नीडामंगलं गांव के निवासी हैं। आपने सेंट जोसफ कॉलिज, तिरुचिरापल्ली, मद्रास विश्वविद्यालय से रसायन विज्ञान में स्नातक की उपाधि हासिल की और दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रथम स्थान प्राप्त करके और प्रोफेसर आर.पी. मिश्रा स्वर्ण पदक प्रदान करना आरंभ किए जाने के वर्ष में ही यह पदक (प्रोफ़ेसर आर.पी. मिश्रा स्वर्ण पदक) अर्जित करके स्नातकोत्तर की उपाधि हासिल की। आप सन् 1966 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में आए और आपने अपने कॅरिअॅर के पहले 25 वर्षों तक गुजरात में विभिन्न पदों पर रह कर सेवा की। आप तब सन् 1971 के भारत-पाक युद्ध के दौरान कच्छ जिले के कलैक्टर थे जब भुज में नागरिक सुरक्षा की कार्रवाई का संचालन करने और बमबारी के जारी रहने के दौरान क्षति-ग्रस्त हो गई हवाई पट्टी की मरम्मत करने के लिए मधापर गांव से कामगारों की बड़ी टुकड़ी हासिल करने के आपके प्रयासों की प्रशंसा की गई।

3. आपने इलैक्ट्रॉनिकी के क्षेत्र में 08 वर्षों से अधिक समय तक सेवा की, जिसमें पहले आप सन् 1987 से 1992 तक की अवधि के दौरान व्यावसायिक इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों का निर्माण करने वाली और अपना लाभ अर्जित करने वाली कम्पनी गुजरात कम्यूनिकेशन एण्ड इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटिड, वडोदरा के प्रबन्ध निदेशक रहे। बाद में आपने सन् 1992 से सन् 1996 तक की अवधि के दौरान भारत-सरकार के इलैक्ट्रॉनिकी विभाग में संयुक्त सचिव, सॉफ्टवेयर सैक्टर के रूप में सेवा की और एस टी पी आई तथा एस ए टी सी ओ एम एम इण्डिया के माध्यम से नीति-निर्धारण तथा हाई स्पीड डाटा कम्यूनिकेशन से संबंधित बुनियादी सुविधाएं क़ायम किए जाने में सहायता की।

4. संस्कृति-विभाग के सचिव के रूप में आपके द्वारा की गई पहलक़दमियों के फलस्वरूप मध्य प्रदेश में भीमबेटका में, गुजरात में चम्पानेर में मध्यकालीन किला-परिसर, तमिलनाडु में चोलापुरम और दरसुआराम मन्दिरों में प्रागऐतिहासिक पेंटिंग्ज़ को विश्व धरोहर-स्थलों के रूप में मान्यता प्रदान की गई और वैदिक मन्त्रोच्चार को मान्यता देकर, उसे विश्व की मौखिक धरोहर में शामिल किया गया। आप हमारे देश की पांडुलिपि-सम्पदा को उजागर करने और उसका परिरक्षण करने के प्रयोजन से राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन शुरू करने में सहायक रहे।

5. आपने योजना-आयोग में शिक्षा, संस्कृति, युवा-मामलों और खेल-कूद के सलाहकार; राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग के महासचिव और बाद में केन्द्रीय गृह-सचिव के रूप में विशेष योग्यता से और प्रतिष्ठापूर्वक सेवा की। आपने केन्द्रीय गृह-सचिव के रूप में कार्य करते हुए, पुलिस-बल के आधुनिकीकरण और पुलिस-कार्मिकों के लिए बेहतर आवासन-सुविधाओं की व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया।

6. आपको फरवरी, 2004 में चुनाव आयुक्त के रूप में और जून, 2006 में मुख्य चुनाव आयुक्त के रूप में नियुक्त किया गया। आप सन् 2009 के संसद के आम चुनावों के संबंध में फोटोयुक्त मतदाता सूची को अनिवार्य किए जाने और मतदाता सूची में आयु-वर्ग-वार तथा लिंग-वार अंतरालों का पता लगाने के लिहाज़ से विश्लेषण करने के साधनों की व्यवस्था शुरू किए जाने में सहायक रहे। निर्वाचन-आयोग में आपके कुशल प्रबन्धन के दौरान, निर्वाचन-आयोग जाली मतदान और मतदान से पहले तथा मतदान के दिन होने वाली हिंसा को सफलतापूर्वक नियंत्रित करके, बृहत् प्रबन्धन से बूथ के स्तर से संबंधित सूक्ष्म प्रबंधन की ओर बढ़ा। इसी के साथ-साथ आपने परिसीमन-आयोग के सदस्य के रूप में भी सेवा की और किसी भी तरह के गोल-माल के बिना विधान सभा और संसदीय चुनाव-क्षेत्रों का फिर से निर्धारण किए जाने में इस आयोग की सहायता की।

7. अपनी सेवा-निवृत्ति के बाद, आपने उपभोक्ताओं से संबंधित मुद्दों, शासन से संबंधित मामलों और संस्कृत के प्रचार-प्रसार में सक्रिय रहने के अलावा, चुनाव-सुधारों और स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनावों की मुहिम जारी रखी है।